नमाज़ मे हाथ कहां बांधे ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला ही के लिए है। जौ सारे जहांनों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ़ करते है और उसी से मदद व माफ़ी चाहते है।

अल्लाह की बेशुमार सलामती, रहमतें, व बरकतें, नाज़िल हों मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम पर। आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

अहले सुन्नत इस बात पर लगभग एक राय है कि नमाज़ मे क़याम के दौरान हाथ बांधना चाहिये। अलबत्ता एक रिवायत के मुताबिक़ इमाम मालिक रह. हाथ छोड़ कर नमाज़ पढ़ने के क़ायल नज़र आते है और यही राफ़ज़ियों का क़ौल व अमल है। लेकिन दूसरे दीगर मसाइल की तरह अहले सुन्नत मे आपस मे इस बात मे भी इख़्तिलाफ़ है कि क़याम मे हाथ किस जगह बांधे जाएं? कोई नाफ़ से नीचे हाथ बांधने को पसन्द करता है तो कोई नाफ़ से ऊपर बांधने को तरजीह देता है तो कुछ अहले सुन्नत सीने पर हाथ बांधने को सही क़रार देते है और सीने पर हाथ बांधते है। लेकिन आम मुसलमान यह जाने बग़ैर कि अल्लाह के रसूल सल्ल. किस जगह हाथ बांधा करते थे ? अपने धर, परिवार, इलाक़े, या माहौल मे जो तरीक़ा राइज देखता है उसी पर अमल करने लगता है। यह सोचने – समझने की उसे फ़ुर्सत ही नही कि यह जानने की कोशिश करे कि इस बारे मे आप सल्ल. का अमल किस जगह हाथ बांधने का था ? जब कि हर नमाज़ी को चाहिये कि वह जाने कि दलाइल की रू से क़याम मे हाथ बांधने की सही जगह कौन सी है ? और उसे कहां हाथ बांध कर नमाज़ पढ़ना चाहिये। इसलिए कि आप सल्ल. का फ़रमान है "तुम नमाज़ उस तरह पढ़ो । जिस तरह तुमने मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है।" (बुखारी–631)

आइये पहले नाफ़ के नीचे हाथ बांधने के दलाइल देखते है और जानते है कि उनकी हक़ीक़त व हैसियत क्या है ?

नाफ़ के नीचे हाथ बांधने की दलीलें और उनका जवाब

1. ज़ैद बिन अली का बयान है कि अली रज़ि. ने फ़रमाया "तीन चीज़े

अम्बिया अलैहिस्सलाम के अख़लाक़ मे से हैं –
1 इफ़्तार मे जल्दी करना 2. सहरी देर से खाना और 3. नमाज़ मे दाएं हाथ को बाएं हाथ पर नाफ़ के नीचे रखना।'' (मुसनद जै़द बिन अली)

जवाब– इस किताब को जै़द बिन अली ने नही बल्कि अब्दुल अजी़ज़ बिन जाफ़र अल बक़ाल ने लिखा है। जनाब जै़द बिन अली 121–122 हिजरी मे फौ़त हुए और यह अब्दुल अजी़ज़ 360 हिजरी मे। इसके बारे मे इमाम ज़हबी रह. कहते है कि इमाम इब्ने आबे फ़वारीस ने फ़रमाया यह ख़बीस मसलक का पैरों कार था। इसकी ज़्यादातर अहादीस मरदूद है। इस रिवायत का एक रावी अम्र बिन खा़लिद है। इसके बारे मे इमाम अहमद बिन हम्बल रह. ने कहा कि यह मनगढ़त रिवायत बयान करता है। इमाम इब्ने हुब्बान रह. ने कहा इमाम अहमद और इमाम यहया बिन मौईन रह., इमाम इसहाक़ रह., इमाम वकीअ रह., और इमाम हाकिम रह. ने इसे रिवायात गढ़ने वाला कहा है। (तहज़ी़ब अल तहज़ी़ब, जुअफ़ा अल अक़ीली, जिरह वल तअदील, मीजानुल एतेदाल) कुल मिला कर यह कि यह एक मन गढ़त किताब की मन गढ़त रिवायत है।

2. अनस रजि़. बयान करते है कि ''दाएं हाथ को बाएं हाथ पर 'नाफ़ के नीचे रखना ,नबी के अख़लाक़ मे से है।

जवाब– यह रिवायत इमाम इब्ने हज़्म रह. के हवाले से नक़ल की जाती है। जबकि यह एक झुटी और बे सनद रिवायत है। हांलाकि यही रिवायत ''नाफ़ के नीचे '' की ज़्यादती के बिना कई सहाबा किराम रजि़. से मरवी है। हत्ता कि अनस रजि़. और अली रजि़. से भी। इमाम तबरानी रह. ने इस– रिवायत को ''नाफ़ के नीचे '' की ज़्यादती के बगै़र अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि़. से बयान किया है कि ''अमबिया अलैहिस्साम की आदत रही है (1) इफ़्तार मे जल्दी करना (2) सेहरी देर से खाना और (3) नमाज़ मे दाएं हाथ को बाएं हाथ पर बांधना।'' (तबरानी –कबीर –जिल्द11, सफ़ा–159 और औसन जिल्द2,सफ़ा–526) यही रिवायत इमाम इब्ने हुब्बान रह. ने जिल्द5 सफ़ा–67 और इमाम बैहक़ी रह. ने जिल्द2 सफ़ा –315 पर नक़ल की है। इसी तरह 'दार कुत्नी –जिल्द1,सफ़ा–284 और मुसनफ़ इब्ने अबि शैअबा जिल्द 1 सफ़ा 428 पर भी नाफ़ के नीचे की ज़्यादती के बगै़र दर्ज है। मालूम होता है कि 'नाफ़ से नीचे' की ज़्यादती किसी अय्यार हाथ की सफ़ाई है।

3. वाइल बिन हुजर रज़ि. बयान करते है कि मैने अल्लाह के रसूल सल्ल. को देखा ''नमाज़ मे दायां हाथ बाएं हाथ पर रखे हुए ''नाफ़ के नीचे''(मुसनफ़ इब्ने अबि शैबा)

जवाब–हकी़क़त यह है कि मुसनफ़ इब्ने अबि शैबा के किसी पुराने नुस्ख़े मे 'तहतुस्सुर्रा ' यानि नाफ़ के नीचे ' के अल्फ़ाज़ नही है।'' यह बाद के लोगों की अन्धी तक़लीद के नतीजे मे की गई, इल्मी ख़यानत है। हांलाकि उस्ताज़ सईद अललिहाम की तहकी़क़ से दारूल फ़िक्र बैरूत ने जो नुस्ख़ा इस किताब का छापा है उसमे भी 'नाफ़ के नीचे ' का ज़िक्र नही है। शैख़ मुहम्मद आबिद सिन्धी हनफ़ी रह. (1257 हिजरी) के लिए इस किताब का जो नुस्खा शैख़ इनायतुल्लाह रह. ने 1229,हिजरी मे तहरीर किया था, उसमे भी नाफ़ के नीचे' का ज़िक्र नही है। शैख़ हम्द बिन अब्दुल्लाह मुसनफ़ इब्ने अबि शैबा के मतबुआ नुस्ख़ो पर तब्सरा करते हुए लिखते है ''इदारतुल कु़रआन वल उलूम अल इस्लामिया कराची वालों ने मज़हबी तअस्सुब की वजह से आप सल्ल. की हदीस मे तहरीफ़ करके वाइल बिन हुजर रज़ि. से मरवी हदीस के आख़िर मे 'नाफ़ के नीचे' अलफ़ाज़ बढ़ा दिये। हांलाकि यह हदीस इस से पहले छपने वाले इस किताब के तीनों नुस्ख़ों के जिल्द 1 सफ़ा 390 पर इस ज़्यादती के बग़ैर मौजूद है। यही रिवायत मुसनद अहमद जिल्द –6 सफ़ा–473, दारकुत्नी जिल्द1 सफ़ा–286, तबरानी –जिल्द 22 सफ़ा– 9 और बैहक़ी –जिल्द 2 सफ़ा–314 पर भी इस 'नाफ़ के नीचे ' की ज़्यादती के बग़ैर मौजुद है। इमाम इब्ने अब्दुल बर रह. की किताब मे भी इस रिवायत मे यह ज़्यादती नही है। सच यह है कि यह ज़्यादती इस किताब के आठ मख़तुतों और तीन मतबूआ नुस्ख़ों मे नही है बल्कि यह पाकिस्तानी शुअबदे बाजो़ के हाथों की सफ़ाई और कमाई है।

4. अली रज़ि. ने फ़रमाया ''नमाज़ मे सुन्नत यह है कि बाएं हाथ पर दाएं हाथ को नाफ़ के नीचे रखा जाए।'' (इब्ने अबि शैबा–जिल्द 1,सफ़ा–42) यह रिवायत इसी सनद से दारकुत्नी, मुसनद अहमद बैहक़ी और अबु दाऊद में भी है।

जवाब :– इस रिवायत को अली रज़ि. से बयान करने वाला अब्दुर्रहमान बिन इसहाक़ अल वास्ती है।इसके बारे मे इमाम अहमद रह. ने कहा यह ऐसा बे की़मत रावी है, जिसकी रिवायत को पसन्द नही किया जाता।(जिरह वल तअदील–जिल्द 5, सफ़ा – 213) इमाम अबु दाऊद रह. इमाम नसाई रह., इमाम ज़हबी रह., इमाम बुख़ारी रह.

इमाम अबु ज़रआ रह., इमाम अबु हातिम राज़ी. रह., और इराक़ी रह. , इसे ज़ईफुल हदीस और मुन्कर अलहदीस कहते है। तो यहया बिन मौईन रह. और इमाम इब्ने खुज़ैमा रह. ने कहा कि तमाम माहिरीनें फ़न ने इसे नाक़ाबिले एतेबार क़रार दिया है।(जिरह व तअदील, तारीख़ अल सग़ीर लिल बुख़ारी, जुअफ़ा अल मतरूकीन–नसाई, मीज़ानुल एतेदाल) इस रिवायत की सनद की दूसरी बुराई इसका शैख ज़ियाद बिन जैद है। इमाम नौवी रह. ने उसे मजहूल कहा है। (जिरह वल तअदील) इमाम नौवी रह. कहते है कि इस रिवायत के ज़ईफ़ होने पर तमाम नाक़िदीन मुहद्दिसीन, का इत्तेफ़ाक़ है। अब्दुर्रहमान बिन इसहाक़ सभी माहिरीने फ़न के नज़दीक ज़ईफ़ है। (शरह अल नौवी) इमाम इब्ने जोज़ी रह. इस से मरवी तमाम रिवायात को मौज़ूअ (बनावटी) मानते है। सार यह कि यह रिवायत सख़्त ज़ईफ़ है।

5. अबु हुरेरा रज़ि. ने फ़रमाया ''नमाज़ मे दाएं हाथ को बाएं हाथ पर नाफ़ के नीचे रखो।'' (अबु दाऊद मअल मुनहल)

जवाब– इस रिवायत का मर्कज़ी रावी भी अब्दुर्रमान बिन इसहाक़ अल कुफ़ी है। इसी रावी की वजह से इमाम अहमद बिन हम्बल रह.'' ने इस रिवायत को ज़ईफ़ कहा है।

6. अली रज़ि. ने 'फ़सल्लि रब्बिक वन हर '' की तफ्सीर यह की कि 'इससे मुराद नमाज़ मे दाएं हाथ को बाएं हाथ पर नाफ़ के नीचे रखना है।''(बैहक़ी–सुनन अल कुबरा)

जवाब– अली रज़ि. से ही इस आयत की तफ्सीर मे इसी किताब मे दो रिवायतें 'सीने पर हाथ बांधना 'आई है।

7. अबु मुजमल रज़ि. कहते है कि ''नमाज़ मे बाएं हाथ पर दाएं हाथ को नाफ़ के नीचे बांधना चाहियें।'' (मुसनफ़ इब्ने अबि शैअबा)
जवाबः–अबु मुजमल रज़ि. ''सीने के ऊपर हाथ बांधने के क़ायल है।''(बैहक़ी–जिल्द,2 सफ़ा–318)

8. इब्राहीम नख़ई रह. ''नमाज़ मे अपने हाथ नाफ़ के नीचे बांधा करते थे।''(मुसनफ़ इब्ने अबि शैअबा)

जवाबः– इब्राहीम नख़ई रह. से इसके खि़लााफ़ भी मरवी है। जैसे ''वह हाथ छोड़कर नमाज़ पढ़ते थे।'')इब्ने अबि शैबा–जिल्द 1, सफ़ा–428, 427,)

9. इन आठ के अलावा एक अक़ली दलील यह दी जाती है कि ''नाफ़ के नीचे हाथ बांधना तअज़ीम के ज़्यादा क़रीब है। जैसे कि नौकर व

गुलाम तअज़ीम के तौर पर अपने आक़ा और बादशाह के सामने खड़े होते है।''(ग़ायता अल सआया–जिल्द 3,सफ़ा–4)

जवाब :– अगर नाफ़ से नीचे हाथ बांधना तअज़ीम और इज़ार बन्द को नीचे गिरने से रोकने का एक ज़रिया है तो फ़िर इन्ही की ख़्वातीन को तअज़ीम करने और इज़ार को गिरने से बचाने के लिए क्यों इस तरीक़े पर अमल नही करने दिया जाता । हालां कि दौराने हमल उन्हे इस तरीक़े की ज़्यादा ज़रूरत है। क्यों उनसे हाथ सीने पर बंधवाए जाते है ? क्या उनके लिए तअज़ीम ज़रूरी नही ?

नमाज़ मे सीने पर हाथ बांधने के दलाइल

1. वाइल बिन हुजर रज़ि. बयान करते है कि मैने अल्लाह के रसूल सल्ल. के साथ नमाज़ पढ़ी। आप सल्ल. ने अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रख कर सीने पर बाधें। '' (इब्ने खुज़ैमा –479–सही)

2. वाइल बिन हुजर रज़ि.का बयान है कि:– ''मै अल्लाह के रसूल सल्ल. की खि़दमत मे उस वक्त हाज़िर हुआ जब आप सल्ल., मस्जिद के लिए निकल चुके थे। आप सल्ल् ने इमामत की जगह पहुंचकर अपने दोनों हाथ उठाए और तक्बीरे तहरीमा कही। फ़िर आप सल्ल. ने अपने दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रख कर उन्हे सीने पर रख लिया।'' (बैहक़ी–सुननअल कुबरा–जिल्द,2 सफ़ा–31)

3. हुल्ब ताई रज़ि. कहते है कि ''मैने नबी सल्ल. को देखा। आप दाएं और बाएं हर दो तरफ़ से फ़िरते थे और मैने देखा कि आप सल्ल. ने इस हाथ को उस हाथ पर रख कर अपने सीने पर रख लिया।'' (मुसनद अहमद–जिल्द 8, सफा–225 और तिर्मिज़ी– हसन) तिर्मिज़ी मे यह अल्फ़ाज़ है कि ''मैने आप सल्ल. को देखा कि आप सल्ल. ने अपने हाथ अपने सीने पर रखे हुए थे।''

4. ताऊस रह. बयान करते है कि ''अल्लाह के रसूल सल्ल. नमाज़ मे सीधे हाथ को उल्टे हाथ पर रखकर उन्हे सीने पर रख लेते।'' (अबु दाऊद –759 मअअल मुन्हल–जिल्द 5 सफ़ा–166) अल बानी रह. कहते है ''यह हदीस अगरचे मुरसल है लेकिन सब उलैमा के नज़दीक यहां हुज्जत है क्यों कि दूसरी सनदों से मौसूल भी वारिद हुई है।''(इरवा अल ग़लील–जिल्द2 सफ़ा–71)

5. जरीर रह. कहते है ''मैने हज़रत अली रज़ि. को देखा आप ने अपने दाएं हाथ से बाएं हाथ को पकड़ कर उन्हे नाफ़ से ऊपर रख लिया ।'' (अबु दाऊद –नुस्ख़ा –इब्नुल अअराबी)

6. अली रज़ि. फ़रमाते है कि इर्शादे बारी तआला ''फ़सल्लिलि रब्बिक वन हर'' से मुराद दाएं हाथ को बाएं हाथ की कलाई पर रखकर सीने पर रखना है।''(बैहक़ी–सुननअल कुबरा जिल्द 2 सफ़ा–316)

7. इब्ने अब्बास रज़ि. ने भी कुरआन की इस आयत की यही तफ़्सीर की है।'' (बैहक़ी–सुननअल कुबरा–जिल्द 2 सफ़ा–318)

8. बैहक़ी के इसी सफ़े पर इस आयत की यही तफ़्सीर अनस रज़ि. से भी बयान हुई है।

9. कुरआन की इस आयत की तफ़्सीर को लुग़वी ताईद भी हासिल है। जैसा कि इमाम राज़ी. कहते है कि अरबी ज़बान की मअरूफ़ किताब ''अल मुन्जद' मै है ' नहूर अला अल सदर' एक दूसरी किताब 'मुअजम' अल वसीत ' मे भी यही मअना है कि 'नहर सीने या सीने के ऊपर के हिस्से को कहते है।

हमारे वो भाई जो नाफ़ के नीचे हाथ बांधना ही सुन्नते रसूल सल्ल. समझते है और इसे साबित करने के लिए पूरा ज़ोर भी लगाते है। उनका यह मामला बड़ा अजीब है कि र वाफ़िज़ के मुक़ाबले मे नमाज़ मे हाथ बांधने का सबुत कुरआन की आयत ''फ़सल्लि लि रब्बिक वन हर'' से पेश करते हुए कहते है– ''यहां नहर का मआनी यही है कि दाहिना हाथ बाएं हाथ पर रखकर सीने पर हाथ बांधते हुए नमाज़ पढो। इमाम फख्र राज़ी. रह. ने तफ़्सीर कबीर जिल्द 8 सफ़ा–712 मे इस आयत की तफ़्सीर मे अली रज़ि. का यह कौ़ल ऩक़ल किया है कि 'सीने पर हाथ बांधकर नमाज़ पढ़े जैसे खुशुअ व खुजूअ का तरीक़ा है।'' तफ्सीर दुर्रे मन्शुर, मुआलिम, अल तन्ज़ील, तनवीर, अलमिक़यास, हुसैनी, वग़ैरह और हदीस की किताबों बुखारी ,तिर्मिज़ी, दार कुत्नी, वग़ैरह मे अली रज़ि. इब्ने अब्बास रज़ि. और दूसरे सहाबा किराम रज़ि. की रिवायत में भी यही मआनी लिखा है। फ़िर ऐसी सरीह और साफ़ आयत के होते हुए ' दुसरी किसी दलील की ज़रूरत नही रहती।'' (आफ़ताबे हिदायत –सफ़ा–430)।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सभी को हक़ मानने और उस पर अमल करने की तौफ़िक़ अता करे और मज़हबी तअस्सुब और हठधर्मी से बचाऐं। आमीन।

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836635
09887239649